गुटनिरपेक्ष देशों की 14वीं शीर्ष बैठक में प्रधानमंत्री का वक्तव्य

दिनांक 15 सितम्बर, 2006
हवाना, क्यूबा

महामहिम अध्यक्ष जी,
गणमान्यजन,
भाइयो और बहनो,

मैं सर्वप्रथम हमारे आंदोलन के इस महत्वपूर्ण अवसर पर गुटनिरपेक्ष देशों के अध्यक्ष का पद संभालने पर क्यूबा को बधाई देता हूँ। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व की अगुवाई पं0 जवाहर लाल नेहरू जो इस आंदोलन के संस्थापकों में से एक थे, प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने की थी। इस नेतृत्व का राष्ट्रपति फीदेल कास्त्रो के प्रति हमेशा ही अत्यधिक आदर और सम्मान रहा है। हमारी कामना है कि राष्ट्रपति फीदेल कास्त्रो जल्दी से स्वास्थ्य लाभ करें और दीर्घायु हों।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस अवसर पर मलेशिया विशेषकर प्रधानमंत्री बादावी को इस आन्दोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने तथा इसमें नई जान डालने हेतु की गई जी-तोड़ कोशिशों के लिए बधाई देना चाहूँगा।

अध्यक्ष महोदय, गुटनिरपेक्ष आंदोलन को आधुनिक समय के महानतम शांति आंदोलनों में से एक बताया गया है। यह आंदोलन औपनिवेशी शासन के खिलाफ हमारे संघर्षों की एक शुरूआत थी और आजाद लोगों के एक संगठन के रूप में इसकी कल्पना की गई थी। हमारे प्यारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू इस आन्दोलन के मुख्य प्रणेताओं मे से एक रहे हैं। उन्होंने कहा था, "गुटनिरपेक्षता वह कार्य स्वतंत्रता है जो आजादी का एक भाग है।" वे चाहते थे कि हम "सभी मुद्दों का फैसला पूरी आजादी और बिना किसी भेदभावपूर्ण पूर्वाग्रह के किया करें।" उनकी इस दूरदृष्टि के बल पर ही हमने विश्वास के साथ 21वीं सदी में कदम रखा है। यही विश्वास आगामी वर्षों में भी हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जिसमें राष्ट्रों के बीच परस्पर निर्भरता निरन्तर बढती जा रही है। हमारे सामने इस बढती हुई परस्पर निर्भरता को संतुलित करने और इसका सही ढंग से प्रबंध करने की चुनौती है। जैसे-जैसे भूमंडलीकरण बढता जा रहा है, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाएं धीरे-धीरे कम सार्थक होती जा रही हैं। हम राष्ट्रों के सामने चुनौती है राष्ट्रीय और स्वायत्त आधार पर समाधान ढूंढ़ने की कम होती जा रही जवाबदेही। पर्यावरण के स्तर में गिरावट और जलवायु परिवर्तन राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं पहचानते। अंतरराष्ट्रीय सहयोग से ही एच.आई.वी./एड्स, मलेरिया, टी.बी अथवा एवियन फ्ल्यू जैसी विश्व महामारियों पर नियंत्रण अथवा रोकथाम लगाई जा सकती है। आतंकवाद जहां कहीं भी है, वह सभी जगह की शांति के लिए खतरा है। हमारी समस्याएं वैश्विक हैं। अतः हमारे समाधान भी इसके अनुरूप ही होने चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र ने अतीत में अन्तर्राष्ट्रीय एजेंडा को सही रूप देने में महत्वपूर्ण और रचनात्मक भूमिका निभाई है। ऐसा ही उसे एक बार फिर कर दिखाना है। वैश्विक महत्व के मुद्दों को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र को पुनर्गठित करना और संयुक्त राष्ट्र महासभा को फिर से सशक्त बनाना वक्त की जरूरत है। विकासशील

देशों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों में अपना समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त करना है। हमें समान विचारधारा वाले देशों के साथ मिलकर काम करना चाहिए, ताकि विश्व सुशासन की प्रक्रिया को लोकतंत्रीय बनाने और एक नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था बनाने की ओर प्रगति हो और यह व्यवस्था ऐसी हो, जो कानून, विवेक और समानता पर आधारित हो।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के हम सभी सदस्य संयुक्त राष्ट्र की कुल सदस्य संख्या के लगभग आधे के बराबर हैं। हमारी कुल मिलाकर ताकत बेजोड़ है और हमें मिलकर मूल रूप से एक ऐसे भूमंडलीकरण का नया दृष्टिकोण अपनाना है जिसमें सभी शामिल हों।

उदाहरण के लिए, हमें चली रही बहुपक्षीय व्यापार वार्ताओं के विकास-परक नतीजे हासिल करने के लिए मिलकर काम करना होगा। आर्थिक मामलों में जैसा कि बाइबिल में कहा गया है, ''जिसके पास होगा उसे दिया जाएगा'', व्यापक रूप से लागू है। इसलिए, हमें ऐसी ठोस वैश्विक कार्यनीतियों की जरूरत है जिनसे गरीब और उपेक्षित लोगों को आर्थिक और सामाजिक विकास के लाभों में बराबरी का हिस्सा दिलाने के लिए सशक्त बनाया जा सके। हमें वैश्विक सहयोग के नए तरीकों की जरूरत है ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही नई-नई प्रगति की पूरी क्षमता का लाभ उठा कर लोगों की जिंदगी में सुधार लाया जा सके तथा गरीबी, उपेक्षा और असमानता से प्रभावी तरीके से निपटा जा सके। भूमंडलीकरण के साथ ही इसके लाभों का संतुलित ढंग से और समता के आधार पर वितरण होना चाहिए। वरना इसकी चुनौती के प्रति दुनिया का जवाब समान नहीं होगा और वह पक्षपातपूर्ण बना रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हम सभी को एक वैश्विक गांव का नागरिक बना दिया है। इससे यह और भी जरूरी हो गया है कि हम एक-दूसरे के प्रति अधिक समझदारी और सहिष्णुता दिखाएं। बहुलवादी लोकतंत्र के मूल्यों को अपनाना बहुत आवश्यक हो गया है। गुटनिरपेक्ष देशों की हैसियत से हम लोगों ने दुनिया को विचारों के आधार पर विभाजित करने की सभी कोशिशें नाकाम करने के लिए संघर्ष किया है। हम शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व में विश्वास रखते हैं और नस्लों में बंट कर रह जाने से आगे बढक़र पूरी इंसानियत के हितों को ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। आज जब हमारे सामने दुनिया के फिर से विभाजित होने का खतरा मौजूद है और सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजन के लिए बनावटी कोशिशें की जा रही हैं, यह हमारे लिए एक चुनौती है।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन में सभी धर्म, सभी नस्ली समूह और सभी तरह के विचारों वाले लोग शामिल हैं और आज इसकी अद्वितीय स्थिति है। एक बार फिर हमें समझदारी के पुल खड़े करने की भूमिका निभानी है। हमारी सहयोगपूर्ण विश्व दृष्टि यह है कि हम ''सभ्यताओं के संघर्ष'' के झूठे विचार को खारिज करें। इसके उल्टे दुनिया के लिए हमारा संदेश यह हो कि ''सभ्यताओं के समागम'' के लिए रचनात्मक कार्य करना संभव है।

''सभ्यताओं के बीच वार्ता'' से परस्पर बेहतर समझबूझ बढ़ाना भी आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने का एक महत्वपूर्ण हथियार है। अगर आज की परिस्थितियों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को सार्थक बनाना है तो आतंकवाद के मुद्दे पर किसी तरह की ढील नहीं दी जा सकती। हमारे आन्दोलन से ऐसा संदेश जाना चाहिए कि हम आतंकवाद की बुराई के खात्मे के लिए दृढ़निश्चय के साथ एक होकर लड़ने को तैयार हैं। हम असहिष्णुता और अतिवाद की ताकतों को दुनिया में बड़े पैमाने पर फैली गरीबी, अज्ञानता और बीमारियों की समस्या से ध्यान बंटाने की इजाजत नहीं दे सकते।

अध्यक्ष महोदय, विचारधारा के आधार पर विभाजन की उभर रही नई रेखाएं इस समय सबसे ज्यादा पश्चिम एशिया में दिखाई दे रही हैं। हम लेबनान में एक निरर्थक और दुखदायी लड़ाई के साक्षी रहे हैं। इससे

असंतोष, अलग-थलग पड़ने और एक ऐसे देश पर जुल्म करने की बात सामने आई है, जो वर्षों से संघर्षों से जूझने के बाद अपनी अन्तर्जातीय और अन्तर्धार्मिक सामंजस्य की विरासत को फिर से संजोने की शुरूआत कर रहा था। पश्चिम एशिया में बढ़ते ध्रुवीकरण से न केवल इस क्षेत्र के देशों को ही बल्कि सारे विश्व को भी नकारात्मक परिणाम भुगतने पड़ेंगे। जैसा कि मैंने पूर्व में कारण बताए हैं, उन्हें देखते हुए मैं समझता हूं कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन पश्चिम एशिया में शांति और सौहार्द की बहाली हेतु रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए अद्वितीय स्थान रखता है।

इसलिए मेरी सिफारिश यह है कि हम लोग पश्चिम एशिया के लिए एक उच्चस्तरीय समूह गठित करें। इसमें उन देशों को शामिल किया जा सकता है जिन्हें संबंधित पक्षों का विश्वास और भरोसा प्राप्त हो और जो इस क्षेत्र में लगातार सद्भाव को बढ़ावा देने और व्यापक और टिकाऊ शान्ति की ऐसी रूपरेखा लागू करने मे सहायता करे, जिस पर सभी पक्ष सहमत हों। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को अपनी पूरी जिम्मेदारी से साथ इस पर ध्यान देना चाहिए और इस मुद्दे को सुलझा कर वहां फिलिस्तीनी लोगों द्वारा वर्षों से उठाई जा रही मुश्किलों का तुरन्त खात्मा करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, यह बड़े ही दुख की बात है कि निरस्त्रीकरण और परमाणु निरस्त्रीकरण पर विशेष जोर देने के मुद्दे को वैश्विक परिदृश्य से अलग-थलग कर दिया गया है। यद्यपि भारत एक परमाणु हथियार सम्पन्न देश है, फिर भी हम मानते हैं कि व्यापक विनाश के हथियारों के जमाव के विरुद्ध सबसे बढ़िया गारंटी निरस्त्रीकरण ही है। 1988 में प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में परमाणु निरस्त्रीकरण की एक व्यापक योजना पेश की थी। मेरा विश्वास है कि समय आ गया है कि जब गुटनिरपेक्ष देशों को एक बार फिर परमाणु निरस्त्रीकरण की वकालत करने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। भारत ने परमाणु निरस्त्रीकरण के बारे मे एक वर्किंग पेपर तैयार किया है, जिसे इस साल संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में प्रचारित किया जाएगा। गुटनिरपेक्ष देशों के सभी साथी राष्ट्रों को मैं आमंत्रित करता हूँ कि वे दुनिया को सभी तरह के परमाणु हथियारों से मुक्त करने और विश्वव्यापी परमाणु निरस्त्रीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के हमारे प्रयत्नों में शामिल हों।

21वीं सदी की एक और चुनौती पर्यावरण सुरक्षा और सबके लिए ऊर्जा सुरक्षा है। पर्यावरण पर प्रथम विश्व शीर्ष बैठक में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने घोषणा की थी, ''प्रथम, द्वितीय या तृतीय विश्व जैसी कोई चीज नहीं है, हम सब एक ही दुनिया के हिस्से हैं।'' गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को ''ऊर्जा सुरक्षा की एक नई अवधारणा'' बनाने की पहल करनी चाहिए, एक ऐसी अवधारणा जिससे हमारी दुनिया के सभी लोगों की जरूरतें पूरी हो सकें।

ऊर्जा सुरक्षा पर गुटनिरपेक्ष आंदोलन का एक कार्यग्रुप स्थापित किया जा सकता है, जो:

1. ऊर्जा सुरक्षा हेतु गुटनिरपेक्ष आंदोलन की एक कार्य योजना तैयार करना जो जीवाश्म ईंधन की बजाय गैर-जीवाश्म ईंधन तथा अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों की बजाय अक्षय ऊर्जा स्रोतों के इस्तेमाल पर आधारित हो;

2. ऊर्जा कुशलता और संरक्षण की बेहतर पद्धतियों में हिस्सेदारी करने के लिए एक नैम-वाइड नेटवर्क का सृजन करेगा ताकि सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर में ऊर्जा की अधिकता को काफी कम किया जा सके; और

3. ऐसे संस्थानों का नेटवर्क स्थापित करेगा जो सौर उर्जा, पवन ऊर्जा, हाइड्रोजन ईधन सेल और जैव ईंधन जिसमें बायोमास और बायो डीजल भी शामिल हैं, जैसे ऊर्जा के नए तथा स्वच्छ स्रोतों का विकास करने के लिए अनुसंधान करेंगे।

भारत ऐसे किसी भी ग्रुप का समन्वय करने के लिए तैयार है।

अध्यक्ष महोदय, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में अफ्रीकी देशों का समूह सबसे बड़ा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी उनकी यही स्थिति है। हमारी इस धरती का भविष्य अटूट रूप से अफ्रीका के भविष्य के साथ जुड़ा हुआ है। मेरा ख्याल है कि यह उपयुक्त समय है जब अफ्रीका को गुटनिरपेक्ष पहल में बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। गुटनिरपेक्ष पहल को कृषि विकास और मानव संसाधनों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इसके लिए हमें एक ऐसा तंत्र बनाना पड़ेगा, जिसके जरिए अफ्रीका के भविष्य में निवेश के लिए हम अपने संसाधनों को इकट्ठा करें। भारत इस समय पैन-अफ्रिकन सेटेलाइट कम्युनिकेशन नेटवर्क की स्थापना के कार्य में शामिल है जिसका उपयोग दूरस्थ शिक्षा और टेली-मेडिसिन परियोजनाओं के लिए किया जा सकेगा। इसके लिए हमें अफ्रीकी यूनियन का सहयोग लेना चाहिए। अफ्रीका के बारे में गुटनिरपेक्ष देशों की पहल के विस्तृत ब्यौरे तैयार करने के लिए हम गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य राष्ट्रों के साथ मिलकर काम करने को तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय, अगर हमें गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को फिर से सशक्त बनाना है तो इस शीर्ष बैठक का सामूहिक संदेश ऐसा होना चाहिए जो अनेक देशों को प्रभावित कर रहे तुरन्त महत्व के मुद्दों को सुलझाने के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों को सफल बनाए-ये मुद्दे चाहे आतंकवाद हों, महामारियां हों, ऊर्जा सुरक्षा हो अथवा पर्यावरण की समस्या हो। एक ग्रुप होने के नाते हमने अतिवाद को नामंजूर किया है। हमें शान्ति के पुजारी महात्मा गांधी के संदेश को दूर-दूर तक फैलाना है। इसीलिए हमारी आवाज सौम्य, सहिष्णु, सामंजस्यपूर्ण और विवेकयुक्त हो। अगर दुनिया के आधे से ज्यादा लोगों की आवाज इसी तरह की हो तो उसका कारगर होना पक्का है। और यही आवाज हमारी इस धरती की नियति का मार्गदर्शन करेगी।